Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue No. IX, January-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में राष्ट्र–निर्माता कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का योगदान

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue No. IX, January-2013, ISSN 2230-7540

पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में राष्ट्र–निर्माता कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का योगदान

Usha Rani

-------------------------------- X --------------------------------

राष्ट्रीयता की भावना मनुष्य की आत्मा की गहराई में होती है। यह कोई सतही भावना नहीं है। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि', 'विषुवत रेखा का वासी जो जीता है नित हांफ–हांफ कर, कर देता है प्राण निछावर वह भी अपनी मातृभूमि पर' या 'चाह नहीं मैं सुर बाला के गहनों में गूँथा जाऊँ..........' आदि पंक्तियाँ कवि की अन्तर्आत्मा की अनुभूति का प्रकाशन है। राष्ट्र–प्रेम का सम्बन्ध केवल भूगोल के टुकड़े से नहीं होता बल्कि उसमें तो स्थान, स्मृति अतीत आदि सब कुछ मिला होता है। राष्ट्र व्यक्ति को 'मैं' की परिधि से निकालकर 'हम' बनाता है। राष्ट्र के कारण मनुष्य का सम्बन्ध पशु–पक्षी, पेड़–पौधे तथा पदार्थों से भी जुड़ जाता है।

प्रभाकर जी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व में सर्वत्र राष्ट्र अपने सर्वांग सहित झिलमिलाता है। व्यक्ति के उत्थान में राष्ट्र का उत्थान देखने वाले प्रभाकर जी का सारा जीवन राष्ट्र के लिए त्याग और सेवा का पर्याय रहा है। व्यक्ति की हीनता राष्ट्र की सबलता को दुर्बलता में परिवर्तित कर देती है। हीनताबोध के परित्याग के लिए वे स्वयं जीवन्त उदाहरण बनकर खड़े हो जाते थे। उनके शब्दों में –''आदमी से मैं सदा आदमी की तरह मिला, न चींटी की तरह, न हाथी की तरह.......''[1] अपनी लघुता से प्यार करके उसे अपने जीवन की सर्वोत्तम विभूति मानने वाले प्रभाकर जी लोगों को अपनी लघुता की सीमा में, अपने–अपने स्तर पर देश–सेवा का संदेश देते हैं। इस प्रकार वे मनुष्य को नकली महानता की ऊंचाई तथा हीनता के दलदल में धंसने से बचाकर मानवता के सामान्य धरातल पर चलना सिखा देते हैं।छोटे–बड़े सबके साथ वे मानवीय व्यवहार करते थे। विष्णु प्रभाकर जी उनके विषय में कहते हैं–''जिसका कोई नहीं, जो सताया गया है, उसके मिश्र जी सबसे बड़े समर्थक हैं। उसे गले ही नहीं लगाते, उसके लिए खुलकर लड़ते भी हैं।''[2] उनके व्यक्तित्व का एक उज्जवल पक्ष यह रहा कि उन्होंने अपने सम्पर्क में आने वाले महान पुरूषों के गुणों को साधारण जन में खोजा और उद्घाटित किया। उनका व्यक्तित्व प्रत्येक मनुष्य के लिए सदैव प्रकाश–स्तम्भ रहेगा।

पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में एक साथ उतरने वाले प्रभाकर जी को दोनों में ही उल्लेखनीय ख्याति मिली। उनके लिए दोनों क्षेत्रों में राष्ट्र–निर्माण ही मछली की आँख रहा। पत्रकारिता में राष्ट्रीय प्रश्नों और चिंतन से सम्बद्व प्रभाकर जी ने कहा था–''मैं छोटी से छोटी अच्छाई को कलम से उभरता हूं और छोटी से छोटी बुराई को उधेड़ता हूं। बिना यह देखे कि अच्छाई मेरे मित्र की है या विराधी की और इसी तरह किसी साधारण आदमी की है या किसी ऐसे शक्तिशाली आदमी की, जो मुझे लाभ या हानि पहुंचा सकता है।''3 अंग्रेजो की अमानवीयता से लोहा लेकर 'विकास प्रैस' को बचाने वाले प्रभाकर जी धैर्य, साहस और अटलता का साकार रूप बनकर जनता को अन्याय के विरूद्ध संघर्ष का मार्ग दिखाते थे। देष की स्वाधीनता के पश्चात् उन्होने ससम्मान अपनी कलम को भी स्वाधीन रखा।

राष्ट्र–निर्माण का पथ सहज नही है। इसके लिए व्यक्ति को समाज की भट्ठी में तपकर पहले कुन्दन बनना पड़ता है। ये गुण प्रभाकर जी के स्वभाव में ही रचे–बसे थे। उन्होने समाज–सरोवर में गहरी डुबकी लगाकर उसे छोटे–बड़े सभी पक्षों को खोजा, देखा–परखा, तराषा और सुन्दर रूप में स्थापित किया। सड़क पर सफाई करने वाले से लेकर व्यवस्था के षिखर पर बैठे, सब उनकी लेखनी का विषय रहे है। चींटी से लेकर पहाड़ तक सब उनके साहित्य में समाया हुआ है। समाज की बुराई का षिकार कर उसे अच्छाई में परिवर्तित करने की कला में उनका कोई सानी नहीं है। उन्होंने समाज में व्याप्त विकृतियों पर जिस प्रकार कलम–खड्ग से वार किया है, वहीं अच्छाईयों को उकेर कर उन पर कलम–चंवर से हिलोर भी दी है। आज यथार्थ के नाम पर जिस तरह अष्लीलता की बाढ़ आ रही है, प्रभाकर जी उससे बहुत दूर रहे। समाज के भद्दे यथार्थ से वे कभी निराष नही हुए। उन्होनें सदैव उत्तम जीवन की तलाष की। समाज की विसंगतियों का चित्रण करने के साथ–साथ उन्होनें मनुष्य में उन विसंगतियों से लोहा लेने का उत्साह भी पैदा किया।

व्यक्ति का अपने घर, परिवार, पडौस, गांव नगर और देष के प्रति क्या उत्तरदायित्व है, इसका अध्ययन कोई जागरूक मनुष्य प्रभाकर जी की साहित्य रूपी पाठषाला में कर सकता है। आज नैतिकता का पतन हो रहा है लेकिन प्रभाकर जी की नजरों में वह पूरी तरह नष्ट नही हुई है बल्कि वह देखने वाले को दिखाई दे जाती है और चाहने वाले को मिल भी जाती है। वे ईर्ष्या, शत्रुता, क्रोध, स्वार्थ, अनास्था और अविष्वास का सपरिणाम चित्र खींचकर मनुष्य को सहयोग, सहानुभूति, दया, करूणा, आस्था और विष्वास की ओर झुकाने का प्रयत्न करते है। दूसरो में दोष–दर्षन की प्रवृति व्यक्ति व राष्ट्र की क्षीण बना देती है। इससे व्यक्ति का मन भी रूग्ण हो जाता है। जब राजनीतिज्ञों में दोष–दर्षन की प्रवृत्ति आती है तो वह राष्ट्र की जड़ो तक पहुंचकर उन्हें खोखला कर देती है। प्रभाकर जी देष को इस रोग से मुक्त करने के लिए आवष्यकतानुसार जहां राजनेताओं के लिए शब्दों की तिक्त औषधि तैयार करते है वहां सहृदयों के लिए माधुर्य का प्रयोग करते है। उनकी कथन शैली जादू की तरह चमत्कृत करके दादी–नानी की कहानी के समान हृदय की गहराईयों में उतर जाती है और फिर हृदय के दोष स्वयं निकलने लगते है।

www.ignited.in

राष्ट्रीय चरित्र व्यक्ति और राष्ट्र दोनों को दुनिया में सम्मान दिलवाता है। सार्वजनिक स्थलों, वस्तुओं, सम्पत्ति, आदि को जब षिष्ट और शिक्षित कहलाने वालों द्वारा नष्ट होता वे देखते हैं तो फटे हृदय और दृढ़ कदमों से आगे बढ़कर लोगों के मन में राष्ट्र–निष्ठा की बेल पैदा करने के लिए जमीन तैयार करते ह। अनुभव और श्रम द्वारा राष्ट्रीय चरित्र के बीज रोपित करके उनको खून के आंसुओं द्वारा सींचते है। प्रभाकर जी देष की दूषित न्याय–व्यवस्था से दुखी होकर भी निराष नहीं होते। न्याय–व्यवस्था राष्ट्र की गति को धुरा होती है। झूठे मुकदमें, निपटारों में देरी, गलत निर्णय, रिष्वतखोरी रूपी जंग इस धुरे में लग गया है। उन्होनें इस जंग को साफ करने के उपायों पर विचार करने पर बल दिया है।

राष्ट्र के लिए प्रभाकर जी उस समय वैद्य का रूप धारण कर लेते हैं जब साम्प्रदायिक हिंसा की बीमारी राष्ट्र के शरीर को अपनी चपेट में ले लेती है। अल्पज्ञानी डॉक्टर के रूप में धार्मिक नेता और राजनीतिक तिकड़मबाज जब इस बीमारी को बढ़ा रहे होते है तब प्रभाकर जी लोगों को मानव धर्म की दवा पिलाकर रोग के कारण और निवारण के विषय में बता रहे होते है। रोग को जड़ से मिटाने के जिए वे क्षमा और अहिंसा की औषधि सदैव रखने की बात करते है।

जब मनुष्य के मन में रावण राम पर बार–बार आक्रमण करता है और राम को राज नहीं ब्रह्मास्त्र थमा देते है। जिससे वह अपनी तथा प्रजा की रक्षा कर सके। इसके साथ–साथ मेल–जोल वाली भारतीय संस्कृति की मजबूत डोर बनाने में वे सिदधहस्त है। इस डोर के टूटने के खतरों के प्रति सचेत करते हुए इसमें नए–नए रंग भी भरते है। जब विदेषी कचरा इस डोर पर जमने लगता है तो प्रभाकर जी बड़ी सफाई से उसे बराबर खुरचते है।

प्रभाकर जी ने सामाजिक–आर्थिक विषमता, ईर्ष्या, जनसंख्या वृद्धि, भ्रष्टाचार, नषा आदि की भयावहता जीवन्त रूप में चित्रित की है। उनकी रचनाओं में सर्वत्र राष्ट्र–निर्माण की भूख दिखाई देती है। ''ये रचनाएं मानव की मनः स्थिति को हीनता से महानता में, संकीर्णता से उदात्तता में, विध्वंस से रचनात्मकता में, असन्तुलन से सन्तुलन में, अगति से गति में परिवर्तित करने की संषोधन शालाएं है।''4 प्रभाकर जी के साहित्य का मुख्य लक्ष्य पंडित जवाहर लाल नेहरू से उनकी बातचीत में स्पष्ट हो जाता है। उन्होंनें कहा था– ''पंडित जी, आपकी औद्योगिक क्रांति में कारखानों की चिमनियां उंची हुई है। यह देष के लिए गौरव की बात है पर इसके साथ ही देष का नागरिक बोना हो गया है। बाने नागरिकों से कोई देष महान हो सकता है? आपका कोई उत्तराधिकारी जब भी देष के बोनों को उंचा कद देने का काम हाथ में लेगा तो उसे जिस साहित्य की अनिवार्य आवष्यकता होगी, वहीं मै तैयार कर रहा हूं।''5

अपने साहित्य में प्रभाकर जी अपनी संवेदना द्वारा मानवीय चेतना को झकझोर कर उसे नया आलोक दे रहे है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व मनुष्य के चित्त, चिन्तन और चेतना को निर्मल बनाकर उसे सन्मार्ग पर अग्रसर करता है। उनके साहित्य के सम्पर्क में आने वाली माटी सदैव सोना बनकर राष्ट्र को चमकाती रहेगी। यदि एक वाक्य में कहना चाहें तो हम कह सकते है कि– उनका साहित्य श्रेष्ठ नागरिकों की टकसाल है। अतः राष्ट्र के प्रति उनके योगदान को देखते हुए उनको राष्ट्रीय चेतना के साहित्यकार के रूप में सम्मान को मिलना चाहिए।

1. 'उत्तर प्रदेष' (पत्रिका) मई 1994, पृ. 4
2. सं.सुरेष चंद्र त्यागी – 'कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकरः व्यक्ति और साहित्य', पृ. 26
3. 'उत्तर प्रदेष' (पत्रिका) मई 1994, पृ. 8
4. कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर – 'जिन्दगी लहलहायी', पृ. 9–10
5. डॉ. मीरा गौतम–'शोधपरक निबन्ध और विविध', पृ. 123–124